अनादिरादि गुरु श्रीश्री हंस भगवान

श्रीश्रीमाँ सर्वाणी

आदि अनन्त भगवान नारायण श्रीहरि ही सर्वजीवों के प्रभु एवं विभु हैं। इस विश्व ब्रह्मांड में वे ही सर्वभूतों में 'क्षर' – देह व 'अक्षर' अर्थात् जीवरूप में वर्तमान हैं। सगुण ब्रह्म सनातन पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण की अंगज्योति से समुद्भूत चतुर्भुज भगवान श्रीहरि के मानसपुत्र के रूप में सर्वप्रथम महाप्रजापति ब्रह्मा आविर्भूत हुए। श्रीभगवान की इच्छानुसार ब्रह्मा ने इस ब्रह्मांड में सृष्टि-प्रकरण आरम्भ किया। परन्तु परमात्मा स्वरूप श्रीभगवान हरि ही होते हैं सर्वजीवों के परमाश्रय, तथापि सृष्टिकार्य सम्पन्न करने के लिए उन्होंने ही ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर रूप में त्रिगुणात्मक देह धारण किया था। श्रीभगवान ही हैं विश्व के आदि कारण एवं परात्पर परमेश्वर। सृष्टि के प्रारम्भ में सृष्टिकर्त्ता रूप में महाप्रजापति ब्रह्मा ने परमपिता का आसन अलंकृत करते हुए सृजन करने के मानस से कठोर तप किया था। इस तपस्या के प्रभाव से एवं तपस्या का फल श्रीभगवान को अर्पण कर देने पर कल्प के प्रारम्भ में भगवान श्रीहरि नारायण चतु:सन रूप में उत्पन्न हुए। कुमार अवतार वर्णन प्रसंग में श्रीमद्भागवत् में सूत ऋषिने कहा हैं –

हंस भगवान के समक्ष चतु:सन मुनिगण व श्रीनारद मुनि

''स एव प्रथमं देव: कौमारं सर्गमास्थित:।
चचार दुश्चरं ब्रह्मा ब्रह्मचर्यमखंडितम्।।''

–(भागवत् - १/३/६)

अर्थात्, सृष्टि के प्रारम्भ में श्रीभगवान सर्वप्रथम सनकादि ऋषिगणों के रूप में ब्रह्माजी के मानस पुत्र के रूप में अवतीर्ण हुए हैं एवं ब्राह्मणरूप में जगत् के शिक्षार्थ अतीव दुश्चर अखंड ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया था। पूर्व कल्पान्त के पश्चात् महाप्रलय में जो आत्मतत्त्वादि विनष्ट होकर विलुप्त हो गये थे, उनका इस कल्प में पुनराय श्रीभगवान ने चतु:सन के रूप में ऋषिमुनिगण को सम्यक उपदेश प्रदान किया। नारदादि ऋषिमुनिगण उस तत्त्वोपदेश को श्रवण करके ही आत्मज्ञ हुए थे। इन चतु:सन के उत्पत्ति के विषय में श्रीमद्भागवत् में ऐसा वर्णित है कि ब्रह्माजी ने पवित्र हृदय होकर भगवत्-ध्यान में निष्काम ऊर्ध्वरेत: सनक, सनन्द, सनातन व सनत्कुमार नामक मुनिगणों की सृष्टि की। (ये ही 'चतु:सन' नाम से पुराण में प्रसिद्ध हैं)। इन चतु:सन ऋषियों के सकल लोकों में अनासक्त, प्रजासृष्टि के विषय में उदासीन, जगत् प्रवृत्तिमार्ग में वीतराग होकर आजन्म ब्रह्मचारी रह कर एकदिन परमपिता कमलासन ब्रह्मा के निकट जाकर अनित्य दु:खमय इस भवसागर से परित्राण पाने का उपाय पूछने से ब्रह्माजी इसका उत्तर प्रदान करने में असमर्थ हुए; कारण, सृष्टिकार्य में नियुक्त रहने से उनका चित्त रजोगुण के प्राधान्य से चंचल एवं विक्षिप्त था। इसीलिए ब्रह्माजी पुत्रों के प्रश्न के उत्तरदान में असमर्थ होकर तब समाधान के लिए श्रीभगवान का ध्यान करने लगे एवं तभी श्रीभगवान ब्रह्माजी के निकट 'हंस' रूप में आविर्भूत हुए। इस क्षेत्र में 'हंस' शब्द का अर्थ हँस पक्षी नहीं, 'हंस' शब्द का अर्थ है 'परमहंस'। तत्पश्चात् श्रीभगवान ने इस परमहंस अवस्था प्राप्त यति या मुनि के रूप में ही सनकादि चतु:सन के निकट आविर्भूत होकर आत्मतत्त्व विषयक मोक्षधर्म का उपदेश प्रदान किया था। श्रीश्रीगुरुगीता के एक श्लोक में भगवान शंकर ने माता पार्वती को कहा हैं –

''पिण्डं कुंडलिनी शक्ति पदं हंसमुदाहृतम्।
रूपं बिन्दुरीति ज्ञेयं रूपातीतम् निरंजनम्।।''

–अर्थात्, कुंडलिनी शक्ति को 'पिण्ड' कहा जाता है एवं हंस को 'पद' कहा जाता है; 'बिन्दु' ही रूप है और रूपातीत हुआ 'निरंजन'। अतएव इस से ही बोधगम्य होता है कि परमात्मा या विराट 'हंस' पद पर अधिष्ठित होकर आत्मतत्त्व के रूप में सत्तांश में प्रकटित होते है इस सृष्टि के मध्य। इसीलिए श्रीभगवान ने आत्मतत्त्व मूलक नाम धारण करते हुए हंस पद पर अधिष्ठित होकर परमहंस के रूप में गुरुरूप में सनकादि के सम्मुख अवतीर्ण होकर आत्मयोग का उपदेश प्रदान किया था। इस समय हंस रूप में अवतीर्ण भगवान का

स्वरूप बोधगम्य न कर सकने से सनकादि चतु:सन ने उस दिव्यकान्तिधारी हंसरूपी श्रीभगवान से प्रश्न किया था। –

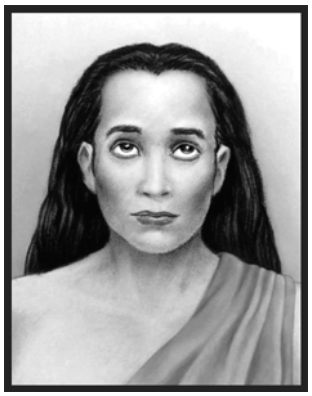

''आप हैं कौन?'' इस प्रश्न के उत्तर में उन हंसरूपी श्रीभगवान ने तब सनक, सनन्द, सनातन व सनत्कुमार को परम गुह्य आत्मज्ञान का उपदेश प्रदान किया था। अवतार रूपी भगवत्सत्ता की एक विशेष विशिष्टता यह है कि किसी भी सत्यतत्त्व पर उपनीत होते हुए उनका आविर्भाव होता है एवं भगवत् सत्ता के व्यक्तित्व के मध्य पूर्णसत्य का तटस्थ लक्षणादि का स्वाभाविक प्रकाश परिलक्षित् होता है। 'हंस' जो भगवान का ही एक नाम हैं यह नाना पुराणादि व शास्त्रों में पाया जाता है। 'हंस' शब्द के अर्थ से भगवान या परमात्मा को ही समझा जाता है। यथा –

''अच्युतं केशवं विष्णुं हरिं सत्यं जनार्द्दनम्।
हंसं नारायणञ्चैव एतन्नामाष्टकं शुभम्।।''

इस सृष्टि में सनकादि चतु:सन ऋषिगण ही है आत्मतत्त्व के आदिगुरु। इन चतु:सन के मध्य श्रीसनत्कुमार हुए सर्वकनिष्ठ एवं सर्वश्रेष्ठ गुणवान। सनकादि चतु:सन ऋषिगण ही ब्रह्मापुत्र नारद ऋषि के आदिगुरु थे। चतु:सन ऋषियों के मध्य यह सनत्कुमार ही योगीराज श्रीश्रीश्यामाचरण लाहिड़ी महाशय के सद्गुरुदेव कैलास बिहारी महावतार श्रीश्रीबाबाजी महाराज का आदि परिचय। युग-प्रयोजन हेतु इन्होंने परवर्तीकाल में शिव पार्वती के पुत्र 'कार्तिकेय' भगवान के रूप में जन्मग्रहण कर तारकासुर का वध किया। प्रजासृष्टि में ब्रह्मापुत्र 'नारद' ऋषि ही श्रीश्रीश्यामाचरण लाहिड़ी महाशय का आदि परिचय हैं।

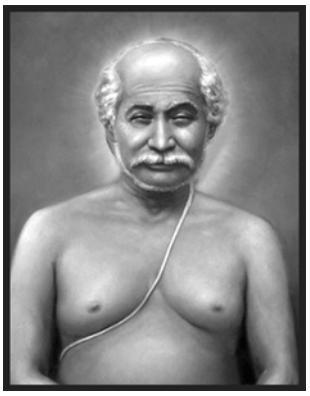

(सहायक ग्रंथों – श्रीश्रीगुरुगीता एवं श्रीमद्भागवत्)

हिन्दी अनुवाद – मातृचरणाश्रिता श्रीमती ज्योति पारेख

–हरि ओम तत् सत्–